Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

कला एवं संस्कृति

(बिहार के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: BRPM18

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

कला एवं संस्कृति

(बिहार के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

BPSC DLP विषय सूची (Contents)

1.	**कला एवं संस्कृति : एक परिचय**	**5–10**
	1.1 कला	5
	1.2 सभ्यता और संस्कृति में अंतर	5
	1.3 बिहार में मौर्य कला	8
2.	**भारतीय वास्तुकला/स्थापत्यकला**	**11–23**
	2.1 वास्तुकला	11
	2.2 बिहार विशेष वास्तुकला/स्थापत्यकला	19
3.	**भारतीय मूर्तिकला**	**24–39**
	3.1 मूर्तिकला	24
	3.2 बिहार विशेष मूर्तिकला	34
4.	**भारतीय चित्रकला**	**40–48**
	4.1 प्राचीन काल में चित्रकला	40
	4.2 मुगलकालीन चित्रकला	42
	4.3 क्षेत्रीय चित्रकला	43
	4.4 बिहार विशेष चित्रकला	44
5.	**भारतीय नृत्य, संगीत एवं रंगमंच कला**	**49–75**
	5.1 भारत में शास्त्रीय नृत्य	49
	5.2 बिहार के प्रमुख नृत्य	55
	5.3 भारतीय संगीत कला	55

5.4 संगीत जगत के प्रमुख व्यक्तित्व 57

5.5 भारतीय रंगमंच के मूल स्रोत एवं स्वरूप 61

5.6 प्रमुख लोकनाट्य 63

5.7 कठपुतली कला 70

6. भारतीय सिनेमा, युद्धकला एवं खेल **76–85**

6.1 सिनेमा का इतिहास 76

6.2 फिल्म पुरस्कार 78

6.3 भारतीय युद्धकला एवं परंपरागत खेल 81

7. विविध **86–144**

7.1 भारत के त्योहार एवं मेले 86

7.2 भारत के सांस्कृतिक संस्थान 107

7.3 भारत में यूनेस्को की सांस्कृतिक धरोहर 115

7.4 भारतीय संस्कृति से संबंधित विविध कानून 128

7.5 सम्मान एवं पुरस्कार 130

7.6 कैलेंडर एवं पंचांग 136

अध्याय
1

कला एवं संस्कृति : एक परिचय
(Art and Culture: An Introduction)

कला एवं संस्कृति समाज एवं जीवन के विकास के मूल्यों की सम्यक् संरचना है। यह समाज में अंतर्निहित गुणों और उच्चतम आदर्शों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला आदि में परिलक्षित होती है।

जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, "कला एवं संस्कृति की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती, परंतु इसके लक्षण देखे जा सकते हैं। हर जाति अपनी संस्कृति को विशिष्ट मानती है। संस्कृति एक अनवरत मूल्यधारा है। यह जातियों के आत्मबोध से शुरू होती है। इस मुख्यधारा में संस्कृति की दूसरी धाराएँ मिलती जाती हैं तथा उनका समन्वय होता जाता है। इसलिये किसी जाति या देश की संस्कृति उसी मूल रूप में नहीं रहती, बल्कि समन्वय से वह और अधिक संपन्न और व्यापक हो जाती है।"

1.1 कला *(Art)*

भारतीय परंपरा में कला के अंतर्गत वे सारी क्रियाएँ आती हैं, जिनमें कौशल अपेक्षित है। दूसरे शब्दों में, कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। **प्रारंभिक कला** शब्द का प्रयोग भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में मिलता है। इसके अलावा 'कामसूत्र', 'शुक्रनीति', प्रबंधकोश (जैन ग्रंथ), ललितविस्तार एवं कलाविकास इत्यादि भारतीय ग्रंथों में कला का वर्णन है। वर्तमान में कला को मानविकी के अंतर्गत रखा जाता है, जिसके अंतर्गत दर्शन, साहित्य, इतिहास और भाषाविज्ञान आदि आते हैं। परंपरागत रूप से निम्नलिखित को कला कहा जाता है। जैसे-

- स्थापत्यकला
- मूर्तिकला
- चित्रकला
- रंगमंच
- संगीत
- नृत्य
- काव्य इत्यादि।

इसके अलावा आधुनिक काल में कॉमिक्स, फोटोग्राफी, विज्ञापन तथा चलचित्रण जुड़ गया।

1.2 सभ्यता और संस्कृति में अंतर
(Differences in civilization and culture)

सभ्यता और संस्कृति इतिहास के केंद्रीय विषय हैं इसलिये इनमें अंतर और साम्य को समझना भी ज़रूरी है। मनुष्य इतिहास का आधार है तथा प्रकृति का दोहन, शोधन एवं अनुकरण मानव सभ्यता के विकास की जड़ में स्थित है।

सभ्यता	संस्कृति
मनुष्य की प्राथमिक/प्रथम आवश्यकता है- भौतिक आवश्यकता यानी भोजन, वसन (वस्त्र) व निवसन (निवास) की तलाश।	बौद्धिक आवश्यकता मनुष्य की द्वितीयक आवश्यकता है। यानी मन में उठने वाली तमाम जिज्ञासाओं, प्रश्नों आदि का समाधान भी मनुष्य के लिये उतना ही ज़रूरी है, जितना भौतिक आवश्यकता का समाधान।

स्तूप

महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् उनके शरीर के अवशेषों को आठ भागों में बाँटा गया तथा उन्हीं अवशेषों पर समाधियों का निर्माण किया गया, जिन्हें स्तूप कहा जाता है। बौद्ध परंपरा के अनुसार सम्राट अशोक ने 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण करवाया था, जिनमें बिहार में वैशाली, गया इत्यादि जगह प्रमुख हैं।

वेदिका

सामान्यत: मौर्यकालीन विहार एवं स्तूप वेदिकाओं से घिरे होते थे। उदाहरणस्वरूप बिहार के बोधगया में अशोककालीन वेदिकाओं के अवशेष मिले हैं। इसके अलावा पाटलिपुत्र से खुदाई के क्रम में तीन वेदिकाओं के टुकड़े मिले हैं, जो चमकीली पॉलिश के कारण मौर्यकालीन कला की विशेषता प्रस्तुत करते हैं।

गुहा-विहार

मौर्ययुगीन कला का यह सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसके अंतर्गत पर्वतों को काटकर गुफाएँ बनाई जाती हैं। सम्राट अशोक एवं उनके पौत्र दशरथ ने बौद्ध आजीवकों के रहने के लिये इनका निर्माण करवाया था, जैसे- गया ज़िले में तीन गुफाएँ नागार्जुनी पर्वत पर और चार गुफाएँ बराबर पर्वत पर पत्थरों को काटकर बनाई गई हैं।

लोककला

मौर्यकाल में लोकरुचि की वस्तुओं के निर्माण हेतु कलाकारों ने दरबार से बाहर वस्तुओं का निर्माण किया। जैसे-

- पटना में दीदारगंज से प्राप्त यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा
- लोहानीपुर (पटना) से प्राप्त दो नग्न पुरुषों की मूर्तियाँ, जिसका निर्माण जैन शैली में कायोत्सर्ग मुद्रा में हुआ है।
- कुम्हरार से विभिन्न पशु-पक्षी तथा नर-नारियों की मृण मूर्त्तियाँ मिली हैं।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- संस्कृति सांस्कृतिक जीवन जीने का एक ढंग है।
- संस्कृति का संबंध आत्मा से है और सभ्यता का संबंध क्रियाकलापों से।
- धर्म भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग है।
- संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें ज्ञान-विज्ञान, विश्वास, रीति-रिवाज, नैतिक मूल्य तथा नियम-कानून आदि सम्मिलित होते हैं।
- संस्कृति से हमारा आशय जीवन स्तर, निवास, वेश-भूषा और भौतिक अनुशीलन से है।
- सामाजिक नृविज्ञानी, 'भौतिक एवं अभौतिक' संस्कृति में भेद मानते हैं।
- अभौतिक संस्कृति साहित्यिक एवं बौद्धिक परंपराओं, विश्वासों, मिथकों, दंतकथाओं और वाचिक परंपरा के अन्य रूपों का बोध होता है।
- संस्कृति के मूलभूत घटक हैं- मूल्य, मान्यताएँ, संकेत, भाषा, लोक-साहित्य, धर्म एवं विचारधाराएँ।
- वास्तुकला संबंधी रचनाएँ, स्मारक, बौद्धिक उपलब्धियाँ, दर्शनशास्त्र, ज्ञान के ग्रंथ, वैज्ञानिक खोज और आविष्कार आदि सभी सांस्कृतिक विरासत के अंग है।
- संस्कृति वह है जो हम हैं और सभ्यता वह है जो हम प्राप्त करते हैं या प्रयोग में लाते हैं।
- संस्कृति और सभ्यता दोनों ही परिवर्तनशील हैं। संस्कृति सभ्यता की उच्च अवस्था है।
- 'सांस्कृतिक विरासत' पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिलने वाली बौद्धिक संपदाओं का योग है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से सही कथन चुनिये-
   (a) संस्कृति सदैव आगे बढ़ती है, परंतु सभ्यता नहीं।
   (b) संस्कृति की माप का एक निश्चित मापदंड होता है, जबकि सभ्यता का नहीं।
   (c) संस्कृति बिना प्रयत्न के हस्तांतरित होती है, किंतु सभ्यता नहीं।
   (d) सभ्यता वह है, जो हम बनाते हैं, जबकि संस्कृति वह है, जो हम हैं।
2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
   (a) सहिष्णुता भारतीय संस्कृति को स्थायित्व प्रदान करती है।
   (b) भारतीय संस्कृति रोम तथा यूनानी संस्कृति के समकालीन है।
   (c) भारतीय संस्कृति में समन्वय की प्रक्रिया विद्यमान है।
   (d) आध्यात्मिकता तथा भौतिकता का समन्वय भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान है।
3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) सभ्यता में परिवर्तन व सुधार संस्कृति की अपेक्षा ज्यादा कठिन है।
   (b) सभ्यता अमूर्त है, जबकि संस्कृति मूर्त है।
   (c) सभ्यता साधन है, जबकि संस्कृति साध्य है।
   (d) सभ्यता आंतरिक है, जबकि संस्कृति बाह्य है।
4. निम्नलिखित में से कौन सत्य नहीं है?
   (a) संस्कृति सामाजिक नियंत्रण में बाधा डालती है।
   (b) संस्कृति व्यवहारों में एकरूपता लाती है।
   (c) संस्कृति मानव को मूल्य एवं आदर्श प्रदान करती है।
   (d) संस्कृति समाजीकरण में योगदान देती है।
5. सामाजिक नृविज्ञानी 'भौतिक एवं अभौतिक' संस्कृति में पाते हैं-
   (a) समानता
   (b) असमानता
   (c) a और b दोनों
   (d) इनमें से कोई नहीं
6. प्रारंभिक 'कला' शब्द किसके द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में मिलता है?
   (a) भरत
   (b) कालिदास
   (c) गौतम
   (d) कौटिल्य
7. प्रबंधकोश क्या है?
   (a) बौद्ध ग्रंथ (b) जैन ग्रंथ
   (c) शैव ग्रंथ (d) वैष्णव ग्रंथ

उत्तरमाला

1. (d) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (b) 6. (a) 7. (b)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. मौर्य कला पर प्रकाश डालिये तथा बिहार में इसके प्रभाव का विश्लेषण कीजिये। **60–62वीं, 53–55वीं, 47वीं, 44वीं B.P.S.C. (Mains)**
2. कला एवं संस्कृति को परिभाषित कीजिये। इस संदर्भ में सभ्यता एवं संस्कृति में तुलनात्मक अंतर स्पष्ट कीजिये।
3. धर्म एवं संस्कृति में अंतर स्पष्ट कीजिये। इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर विस्तृत टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

भारतीय वास्तुकला/स्थापत्यकला (Indian Architecture)

विद्वानों के अनुसार, संस्कृत में कला शब्द मुख्यत: अलंकरण या शोभा से संबंधित है। वहीं इतिहास व संस्कृति में इसे सौंदर्य अथवा आनंद से परिभाषित किया गया है। साथ ही प्राचीन भारत में इसे साहित्य और संगीत के समकक्ष माना गया है। कला शब्द के अंग्रेज़ी अनुवाद 'आर्ट' का आशय भी कौशल या निपुणता से है। यानी कला सौंदर्यशास्त्रीय सृजनात्मकता का प्रतीक है। प्रवृत्तियों के आधार पर तो कला के अनेक रूप हैं, किंतु अध्ययन के लिहाज से इसका सामान्य वर्गीकरण निम्नलिखित है-

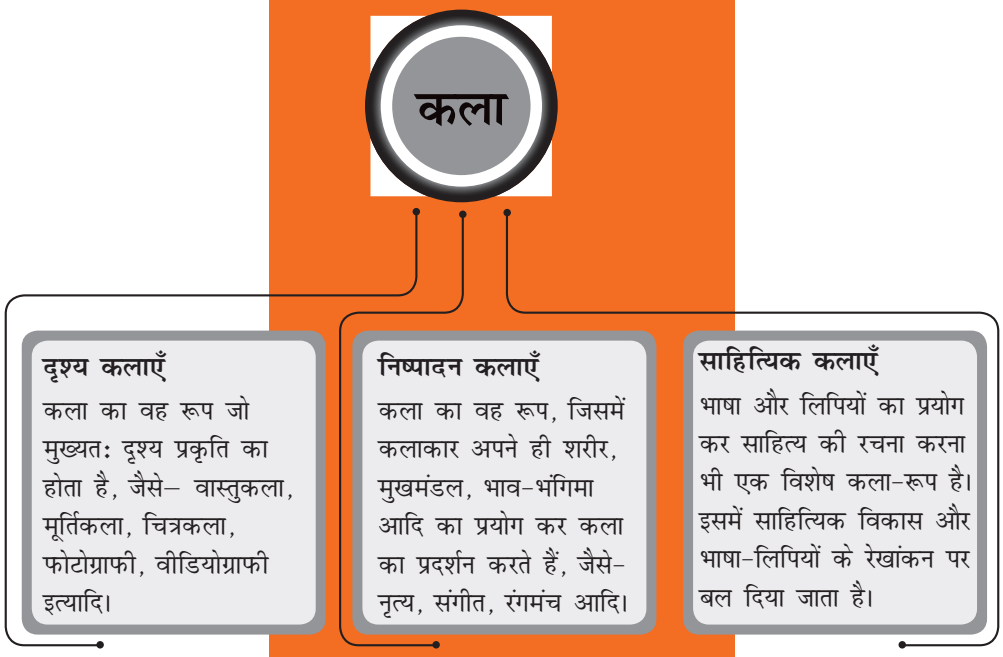

2.1 वास्तुकला *(Architecture)*

कला की भाँति वास्तुकला या स्थापत्यकला के उद्भव एवं विकास का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है, जितना कि मानव सभ्यता का। मानव सभ्यता ने जैसे-जैसे प्रगति की, वैसे-वैसे वास्तुकला एवं स्थापत्यकला के रूपों में भी परिवर्तन आता गया। भारत में प्रागैतिहासिक काल से लेकर 12वीं सदी तक स्थापत्यकला के विकास में निरंतरता दिखती है। यद्यपि भारतीय कला पर विदेशी प्रभाव प्रारंभ से ही बार-बार पड़ता रहा है, तथापि कलाओं का भारतीय स्वरूप बरकरार रहा। अत: 13वीं सदी से लेकर ब्रिटिश काल के बीच भी भारतीय स्थापत्यकला ने एक नई ऊँचाई ग्रहण की। भारत में कला और धर्म का घनिष्ठ संबंध रहा है। यहाँ कला में धर्म की भूमिका अथवा आध्यात्मिकता का अत्यधिक प्रभावशाली एवं व्यापक पक्ष दृष्टिगोचर होता है। परिणामस्वरूप कला संप्रेषण का माध्यम बनकर तत्कालीन समाज की आवश्यकता की पूरक बन गई। अध्ययन की दृष्टि से भारतीय स्थापत्यकला को उसकी प्रवृत्तियों, विशेषताओं तथा कालक्रम के संदर्भ में देखना ज़्यादा समीचीन होगा।

अध्याय
3

भारतीय मूर्तिकला (Indian Sculpture)

मूर्तिकला भारतीय उपमहाद्वीप में हमेशा से कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रिय माध्यम रही है। भारतीय भवनों के निर्माण और साज-सज्जा में जिस तरह से मूर्तिकला का उपयोग किया गया है, वह भवनों के सौंदर्य का विशेष कारक है। भारतीय कला का स्वरूप रोचक, सहज और मूर्तिप्रधान है। ऐसा लगता है मानो भारत में मूर्तिकार और वास्तुकार अक्सर एक ही व्यक्ति होता होगा। प्राचीन भारत में मूर्तिकला का विकास अन्य ललित कलाओं, जैसे- स्थापत्य तथा चित्रकला के साथ ही हुआ दिखता है। मूर्तिकार किसी भावना को मिट्टी, पत्थर अथवा धातु से मंदिर की दीवारों या उसके भीतरी भागों में उकेर देता है।

3.1 मूर्तिकला *(Sculpture)*

भारत में मूर्तिकला का विकास अनेक रूपों में हुआ, जैसे- मृण्मूर्तिकला, धातु मूर्तिकला, पाषाण मूर्तिकला आदि। एक ओर जहाँ यवन मानव शरीर की दैहिक सुंदरता को दर्शाने में सर्वोपरि थे, वहीं भारतीय अपने अध्यात्म को मूर्तियों में ढालने का प्रयास करने में अद्वितीय थे। यह वह अध्यात्म था, जिसमें लोगों के उच्च आदर्श और मान्यताएँ निहित थीं। जब कलाकार प्रकृति देवी यक्षिणी या जनन की प्रतीक नारी या दिव्य सुंदरी की परिकल्पना करता है तो उसकी भौंहें धनुष की चाप, आँखें वक्र मछली, होंठ कमल की पँखुड़ी, बाँहें रमणीय लता और पैर केले के वृक्ष की भाँति शुंडाकार बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय कला में आध्यात्मिकता और सौंदर्यबोध दोनों का मिश्रित रूप देखने को मिलता है।

हड़प्पाकालीन मूर्तिकला

- हड़प्पा सभ्यता में मृण्मूर्ति (मिट्टी की मूर्ति), प्रस्तर मूर्ति तथा धातु मूर्ति तीनों गढ़ी जाती थीं। धातु मूर्तियों के निर्माण के लिये हड़प्पा सभ्यता में मुख्यत: तांबे और काँसे का प्रयोग किया जाता था।
- सेलखड़ी पत्थर से बनी मोहनजोदड़ो की योगी की मूर्ति (अधखुले नेत्र, नाक के अग्रभाग पर टिकी दृष्टि, छोटा मस्तक व सँवरी हुई दाढ़ी) इसकी कलात्मकता का प्रमाण है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक नर्तकी की धातु मूर्ति (काँसा) भी मूर्तिकला का बेजोड़ नमूना है।

मौर्यकालीन मूर्तिकला

- चमकदार पॉलिश (ओप), मूर्तियों की भावाभिव्यक्ति, एकाश्म पत्थर द्वारा निर्मित पाषाण स्तंभ एवं उनके कलात्मक शिखर (शीर्ष) मौर्यकालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ हैं।
- मौर्यकाल में जो मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं उनमें पत्थर व मिट्टी की मूर्तियाँ तो मिली हैं, किंतु धातु की कोई मूर्ति नहीं मिली है।
- मौर्यकाल में मूर्तियों का निर्माण चिपकवा विधि (अँगुलियों या चुटकियों का इस्तेमाल करके) या साँचे में ढालकर किया जाता था।
- मौर्यकालीन मृण्मूर्तियों के विषय हैं- पशु-पक्षी, खिलौना और मानव अर्थात् ये मृण्मूर्तियाँ गैर-धार्मिक उद्देश्य वाली मृण्मूर्तियाँ हैं।
- प्रस्तर मूर्तियाँ अधिकांशत: शासकों द्वारा बनवाई गई हैं, फिर भी किसी देवता को प्रस्तर मूर्ति में नहीं ढाला गया है।
- कुछ विद्वानों के अनुसार मौर्यकालीन मूर्तिकला पर ईरान एवं यूनान की कला का प्रभाव था।

शुंग/कुषाणकालीन मूर्तिकला

- प्रथम शताब्दी ईस्वी सन् से इस दौर में मूर्तियों के साथ-साथ प्रतिमाओं का भी प्रादुर्भाव हुआ तथा नवीन मूर्तिकला शैली का भी आगमन हुआ। प्रतीकात्मकता इस काल की मूर्तिकला की प्रधान विशेषता है।
- इसी दौर में गांधार शैली और मथुरा शैली का विकास हुआ।

अध्याय
4

भारतीय चित्रकला (Indian Painting)

रेखा, वर्ण एवं रंग के माध्यम से विचारों तथा भावों को अभिव्यक्त करने की शैली को चित्रकला कहते हैं। आत्माभिव्यक्ति मानव की प्राकृतिक प्रवृत्ति है। अभिव्यक्ति की इच्छा मानवीय अस्तित्व की मूलभूत आवश्यकता है। अपने अंदर के भाव प्रकट किये बिना मनुष्य रह ही नहीं सकता और भावों का आधार होता है– मनुष्य का परिवेश। विद्वानों की मान्यता है कि आदिम काल में जब भाषा और लिपि-चिह्नों का आविर्भाव नहीं हुआ था, तब रेखाओं के संकेत से ही व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करता था। गुफाओं के अंदर आज जो शिलाचित्र मिलते हैं, वे ही चित्रकला के आदिम प्रमाण हैं। इतिहास का उदय होने से पूर्व कई हज़ार वर्षों तक जब मनुष्य गुफा में रहता था, उसने अपनी सौंदर्यपरक अतिसंवेदनशीलता और सृजनात्मक प्रेरणा को संतुष्ट करने के लिये शैलचित्र बनाए।

प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो उसने गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की। बाद में जब नगरीय सभ्यता का उदय होने लगा तो चित्रकारी गुफाओं से निकलकर बर्तनों, वस्त्रों, मुहरों आदि पर होने लगी। बौद्ध एवं जैन धर्म के आगमन और उनकी संवृद्धि के साथ-साथ चित्रकला में और अधिक नवीनता के संकेत मिलने लगते हैं। इस दौर की कला में रंग संयोजन और भाव चित्रण धार्मिकता के गहरे आवरण में डूबा था। फिर मध्यकाल में मुगलों का दौर शुरू होने पर भारतीय चित्रकला में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। मुगल बादशाह जहाँगीर इस कला का बेहतरीन जानकार था। उत्तर मुगल काल में गिरती राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के कारण चित्रकार स्थानीय ज़मींदारों और राजाओं की शरण में चले गए। इस दौरान क्षेत्रीय चित्रकला शैलियों का व्यापक विकास हुआ। अंग्रेज़ी राज में एक बार फिर चित्रकला को नई दृष्टि मिली और कला में आंदोलनों का दौर प्रारंभ हुआ। वर्तमान दौर में चित्रकारों ने कला में नवीनतम प्रयोग, जैसे- विनाइल कंप्यूटर और वीडियो पेंटिंग को अपनाना शुरू किया है। इस प्रकार भारतीय चित्रकला को यदि समग्रता से देखते हैं तो यह विकासमान नज़र आती है। यह मानव सभ्यता के विकास से लेकर आज तक अपनी कलात्मक उर्वरता का परिचय देती रही है।

4.1 प्राचीन काल में चित्रकला *(Pointing in Ancient Times)*

प्रागैतिहासिक कला

भारत में कला के रूप में चित्रकला का विकास सर्वप्रथम पुरापाषाण काल में हुआ। इस काल की चित्रकला का उदाहरण भीमबेटका एवं आदमगढ़ की गुफाओं में मिलता है। यहाँ बने चित्रों से स्पष्ट होता है कि-

- चित्रकारों को स्त्री-पुरुष का भेद ज्ञात था।
- शिकार ही जीवनयापन का मुख्य साधन था।
- लोग समूह में रह रहे थे। शेर, कुत्ता व हाथी जैसे पशुओं की मौजूदगी थी।

हड़प्पाकालीन कला

- यहाँ कला के नमूने मुहर एवं मृद्भांड पर मिलते हैं। फूल-पत्ती, ज्यामितीय प्रतीकों का अंकन तो है ही, साथ ही पशुओं एवं मानव का भी अंकन मिलता है। इस तरह चित्रों में रेखा प्रधानता है।
- मुहर पर पशुपति का अंकन मिलता है तो साथ ही मृद्भांडों पर पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी का कथानक भी अंकित है।

बौद्ध चित्रकला

अजंता चित्रकला

- बौद्ध चित्रकला मुख्यत: भित्ति चित्रकला का उदाहरण है जिसे मुख्यत: अजंता की गुफाओं में देखा जा सकता है। यहाँ बुद्ध का जन्म, गृहत्याग, प्रथम उपदेश आदि का अंकन मिलता है।

अध्याय
5

भारतीय नृत्य, संगीत एवं रंगमंच कला (Indian Dance, Music and Theater Art)

नृत्य एक सार्वभौमिक कला है जिसका जन्म मानव जीवन के आरंभ के साथ ही हुआ है। वस्तुतः नृत्य मानवीय अभिव्यक्ति का रसमय और क्रियात्मक प्रदर्शन है। इसे दूसरे रूप में कहें तो यह एक सशक्त आवेग है जिसके माध्यम से मानव जीवन के दोनों पक्षों, यथा-सुख एवं दुःख को विभिन्न नियंत्रित मुद्राओं द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। इस प्रकार अंग-प्रत्यंग एवं मनोभावों के साथ की गई नियंत्रित यति-गति को नृत्य कहते हैं।

भारतीय परंपरा में नृत्यकला के दो अंग स्वीकार किये गए हैं- तांडव तथा लास्य। तांडव नृत्य का जनक भगवान महादेव (शंकर) को माना गया है। तांडव नृत्य में संपूर्ण खगोलीय रचना एवं इसके विनाश की एक लयबद्ध कथा को नृत्य के रूप में दर्शाया गया है। तांडव नृत्य में दो भंगिमाएँ हैं- रौद्र रूप एवं आनंद प्रदान करने वाला रूप। इसका पहला रूप काफी उग्र होता है तथा इसे करने वाले 'रुद्र' कहलाए। जबकि तांडव का दूसरा रूप आनंद प्रदान करने वाला है, जिसे करने वाले शिव 'नटराज' कहलाए। इस रूप में तांडव नृत्य का संबंध सृष्टि के उत्थान एवं पतन दोनों से है।

वहीं, लास्य नृत्य का आरंभ देवी पार्वती से माना जाता है। इसमें नृत्य की मुद्राएँ बेहद कोमल, स्वाभाविक एवं प्रेमपूर्ण होती हैं तथा इसमें जीवन के शृंगारिक पक्षों को विभिन्न प्रतीकों व भावों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

5.1 भारत में शास्त्रीय नृत्य *(Classical Dance in India)*

लोकदृष्टि से शिव की नटराज मूर्ति शास्त्रीय नृत्य का प्रतीक है, जिसमें नृत्य के हाव-भाव एवं मुद्राओं का समावेश है। शास्त्रीय नृत्य मूल रूप से शास्त्रीय पद्धति पर आधारित है। शास्त्रीय नृत्य से संबंधित उल्लेख भरतमुनि द्वारा लिखित 'नाट्यशास्त्र' एवं आचार्य नंदिकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' में मिलता है। नाट्यशास्त्र में वर्णित मुद्राएँ ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य की मूल आधार हैं।

भारतीय नृत्य परंपरा में शास्त्रीय नृत्य की 4 शैलियाँ प्रचलित थीं- भरतनाट्यम, कथकली, कथक एवं मणिपुरी। कुचिपुड़ी एवं ओडिसी को शास्त्रीय नृत्य की मान्यता बाद में मिली। लगभग 20 वर्ष पहले मोहिनीअट्टम को शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में ख्याति मिली, जबकि सत्रिया नृत्य शैली को संगीत नाटक अकादमी द्वारा 15 नवंबर, 2000 को शास्त्रीय नृत्य की सूची में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार भारत में वर्तमान समय में 8 शास्त्रीय नृत्य प्रचलित हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है-

भरतनाट्यम नृत्य (तमिलनाडु)

- इस नृत्य शैली का विकास तमिलनाडु में हुआ।
- भरतनाट्यम तमिल संस्कृति में लोकप्रिय एकल नृत्य है जो शुरुआती दिनों में मंदिर की देवदासियों द्वारा भगवान की मूर्ति के समक्ष किया जाता था। इसे 'दासीअट्टम' के नाम से भी जाना जाता था।
- देवदासियों द्वारा किये जाने के कारण इसे समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था।
- किंतु 20वीं शताब्दी में रुक्मिणी देवी अरुंडेल तथा ई. कृष्ण अय्यर के प्रयासों ने इस नृत्य को सम्मान दिलाया।

भरतनाट्यम नृत्य

- वर्तमान समय में तमिलनाडु में इस नृत्य की शिक्षा ग्रहण करना तथा नृत्याभ्यास व मंचन को प्रतिष्ठा के विषय के रूप में देखा जाने लगा है।
- भरतनाट्यम में नृत्य और अभिनय सम्मिलित होता है। इस नृत्य में शारीरिक भंगिमा पर विशेष बल दिया जाता है। नृत्य का आरंभ आलारिपु/स्तुति से तथा अंत तिल्लाना से होता है, जिसमें बहुविचित्र नृत्य भंगिमाओं के साथ-साथ नारी सौंदर्य के अलग-अलग लावण्यों को दिखाया जाता है।

अध्याय
6

भारतीय सिनेमा, युद्धकला एवं खेल (Indian Cinema, Warfare and Sports)

मानव समाज ने अपने विकास क्रम में अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों का विकास किया है। बोलने– लिखने से लेकर चित्र बनाने के साथ चलचित्र (सिनेमा) विचारों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम के रूप में विकसित हुआ, साथ ही कला के विभिन्न रूपों, यथा– चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला इत्यादि वे साधन बने जिसने अमूर्त विचारों को मूर्त रूप प्रदान किया। चूँकि मानव के विचार तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं, इसलिये स्वाभाविक रूप से उनकी अभिव्यक्ति जिस भी माध्यम से संपादित होती है, उस पर तत्कालीन समय की छाप होती है। यही वज़ह है कि हर युग में कला की अपनी एक विशेषता होती है, जो न केवल तत्कालीन समाज का चित्रण करती है, बल्कि उसका वितान फंतासियों से लेकर एक आदर्श समाज की कल्पना तक विस्तृत होता है। सिनेमा भी इस नियम का अपवाद नहीं है अर्थात् यह भी अपने समय की विशेषताओं से युक्त होता है। साथ ही, सिनेमा मनोरंजन का भी एक साधन है। किसी समय के समाज के अध्ययन में यह तत्त्व काफी महत्त्वपूर्ण होता है कि उस समय मनोरंजन के कौन-कौन से साधन प्रचलित थे तथा उस समय मनोरंजन का स्वरूप कैसा था? मूक रूप में शुरू हुआ सिनेमा जल्द ही दृश्य-श्रव्य में परिणत हो गया तथा ज्यों-ज्यों तकनीक का विकास होता गया, सिनेमा का स्वरूप और भी उन्नत होता चला गया। पूंजी निवेश की प्रक्रिया ने भी फिल्म निर्माण के विषय को प्रभावित किया। यह जानना महत्त्वपूर्ण होगा कि उदारीकरण के बाद जब जीवनगति तेज़ हो गई तब सिनेमा पर क्या प्रभाव पड़ा? साथ ही, उदारीकरण के साथ पूंजी के बढ़ते महत्त्व ने सिनेमा को कितना बदला? इसके अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ यह भी है कि सिनेमा का स्वरूप कितना समावेशी है?

6.1 सिनेमा का इतिहास *(History of Cinema)*

थॉमस एडिसन ने अपने सहयोगी विलियम कैनेडी के साथ मिलकर पहले मोशन कैमरे 'कीनेटोग्राफ' का आविष्कार किया। यह काफी वज़नी था तथा इसका उपयोग करना अत्यंत ही कठिन था। आगे चलकर फ्राँस में 'लुमियर ब्रदर्स' ने अपेक्षाकृत अधिक उन्नत तकनीक से युक्त कैमरा बनाया जिसे 'सिनेमेटोग्राफ' कहा गया। यह उपयोग की दृष्टि से अधिक बेहतर आविष्कार था। इस प्रकार लुमियर ब्रदर्स ने 1895 में दुनिया की पहली फिल्म का प्रदर्शन पेरिस में किया। भारत में भी फिल्म का पहला प्रदर्शन लुमियर ब्रदर्स द्वारा 1896 में मुंबई के वाटसन होटल में किया गया। यह दिलचस्प है कि भारत में सिनेमा का प्रवेश प्रथम 6 माह के अंदर ही हो गया। हालाँकि इसके बाद लगभग 15 वर्षों तक किसी स्वदेशी प्रोडक्शन हाउस द्वारा फिल्मों का निर्माण न हो सका।

हिंदी सिनेमा का विकास

स्वतंत्रता के बाद भारतीय सिनेमा के स्वरूप में भी बदलाव आया तथा विचार कहीं अधिक आज़ादी से सिनेमा के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगे। हालाँकि फिल्मों को सेंसर करने की व्यवस्था बनी रही। 'केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड' (Central Board of Film Certification – CBFC), जो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन कार्यरत एक सांविधिक निकाय है, फिल्मों के सार्वजनिक प्रदर्शन के पहले उसे प्रमाण-पत्र जारी करता है। इसका गठन 'सिनेमेटोग्राफ एक्ट, 1952' के तहत किया गया है।

1950–60 के दशक को हिंदी सिनेमा का 'स्वर्णिम युग' कहा जाता है। महबूब खान, बिमल रॉय, गुरुदत्त, राजकपूर जैसे फिल्मकारों ने अपने समय की फिल्मों का वितान काफी विस्तृत किया। दरअसल, वह दौर काफी उथल-पुथल भरा था। इनमें से अधिकांश फिल्मकारों ने वह दौर देखा था जब भारत औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था तो दूसरी तरफ फासीवाद के विरुद्ध वैश्विक संघर्ष छिड़ा हुआ था। परतंत्र भारत की दयनीय सामाजिक-आर्थिक दशा के बाद जब भारत आज़ाद हुआ तो स्वाभाविक रूप से परिवर्तन की एक व्यापक आस जगी। तत्कालीन सिनेमा में एक तरफ स्वप्न है तो दूसरी तरफ उस स्वप्न व यथार्थ के अंतर्विरोध का चित्रण भी।

उस दौर में बनी कुछ शानदार फिल्मों में गुरुदत्त की 'प्यासा' व 'कागज़ के फूल', राजकपूर की 'आवारा' तथा 'श्री 420', बिमल रॉय की 'दो बीघा ज़मीन', महबूब खान की 'मदर इंडिया' इत्यादि हैं। इसके अतिरिक्त भी उस दौर में कई

अध्याय
7

विविध
(Miscellaneous)

7.1 भारत के त्योहार एवं मेले *(Festivals and Fairs of India)*

भारत मेलों और त्योहारों का देश है। हमारे देश में विभिन्न समुदाय अपने-अपने धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों के साथ परस्पर प्रेम और भाईचारे के साथ निवास करते हैं। हर धर्म से जुड़े लोगों के अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक त्योहार हैं। इनमें से अनेक त्योहार मौसम में आने वाले सालाना परिवर्तनों और उनके साथ गुँथे फसल-चक्र से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिये, पूरे देश में बसंत ऋतु के आने का उत्सव स्थानीय विविधताओं व कलेवर के साथ मनाया जाता है पर इन सबमें प्रकृति के प्रति श्रद्धा का तत्त्व समान रूप से विद्यमान है।

त्योहार भाग-दौड़ वाली ज़िंदगी से थोड़ा समय निकालकर लोगों को अपने प्रियजनों के साथ मिल-बैठने का मौका उपलब्ध कराने के साथ-साथ सामाजिक सद्भाव बढ़ाने में भी सहायक होते हैं।

त्योहारों की महत्ता इस बात में भी है कि वे नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से न सिर्फ परिचित कराते हैं, बल्कि उन्हें परंपरा का वाहक बनने के लिये भी तैयार करते हैं। भारत के प्रमुख त्योहार, मेले व महोत्सव निम्नलिखित हैं–

राष्ट्रीय पर्व

गणतंत्र दिवस

26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अंगीकार किया व अगले वर्ष 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान को लागू किया गया। संविधान को लागू करने हेतु इस तिथि का चुनाव करने के पीछे ऐतिहासिक कारण भी है। उल्लेखनीय है कि 31 दिसंबर, 1929 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 26 जनवरी, 1930 को 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की गई थी। अत: जब भारतीय संविधान बनकर तैयार हुआ तो इसे लागू करने के लिये 26 जनवरी, 1950 के दिन का चुनाव किया गया।

इस दिन दिल्ली में 'राजपथ' पर एक भव्य परेड का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश की सैन्य क्षमता और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाने वाली झाँकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। गणतंत्र दिवस समारोह का समापन 29 जनवरी को, तीनों सेनाओं के संयुक्त बैंड के 'बीटिंग रिट्रीट' कार्यक्रम के साथ होता है। इस दिन पूरे देश में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

स्वतंत्रता दिवस

एक लंबे स्वतंत्रता संघर्ष के बाद भारत को 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्ति मिली। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 'लाल किले' की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज फहराया व देश के नागरिकों को संबोधित किया। तब से प्रतिवर्ष 15 अगस्त को देश के प्रधानमंत्री 'लाल किले' पर ध्वजारोहण करते हैं व देश को संबोधित करते हुए, स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक की उपलब्धियों और भविष्य की चुनौतियों के बारे में बताते हैं। इसके उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन पूरे दिन चलता है। इसी प्रकार के कार्यक्रम देश के सभी राज्यों में भी आयोजित किये जाते हैं, जिनमें देश की संस्कृति को दर्शाने वाले रंगारंग कार्यक्रम भी होते हैं।

गांधी जयंती

महात्मा गांधी का जन्मदिवस प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। अपने अहिंसात्मक आंदोलनों द्वारा देश को आज़ादी दिलाने में केंद्रीय भूमिका निभाने वाले महात्मा गांधी को देश, 'राष्ट्रपिता' के तौर पर याद करता है। इस दिन राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री सहित देश के शीर्ष अधिकारी उनकी समाधि पर श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं;

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456